# यजुर्वेद-समिदाधानम्

## अनुऋमणिका

| समिदाधानम् |         |     |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 3 |   |   |   |   |   |
|------------|---------|-----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
|            | सङ्कल्प | : . |    | • |   |   |   |   | • | • | • | • |   | • |   | • | • | • | 3 |
|            | परिषेच  | नम् | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 3 |
|            | होमः    |     | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 3 |
|            | उपस्था  | नम् | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 4 |
|            | भस्मध   |     | म् | • | • |   | • | • | • | • | • | • |   | • | • | • | • | • | 5 |
|            | समर्पण  | ाम् |    | • |   |   |   |   | • |   | • | • |   | • |   | • | • |   | 6 |

## ॥ समिदाधानम्॥ ॥ सङ्कल्पः॥

### आचमनम्।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥

#### प्राणायामः।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातः (सायं) समिदाधानं करिष्ये। (लौकिकाग्निं प्रतिष्ठाप्य। अग्निमिध्वा। प्रज्वाल्य।)

## ॥ परिषेचनम्॥

परिं त्वाऽग्रे परिमृजाम्यायंषा च बलेन च सुप्रजाः प्रजयां भूयास स्वीरों वीरैः सुवर्चा वर्चसा सुपोषः पोषैंः सुगृहों गृहैः सुपतिः पत्यां सुमेधा मेधयां सुब्रह्मा ब्रह्मचारिभिः। (तूष्णीं परिषिच्य) [देवं सवितः प्रसुंव।]

## ॥ होमः॥

अग्नयें स्मिध्माहांर्षं बृह्ते जातवेदसे। यथा त्वमंग्ने स्मिधां सिम्द्धसं एवं मामायुंषा वर्चसा स्न्या मेधयां प्रजयां पश्भिंब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहां॥१॥

एधों ऽस्येधिषीमहि स्वाहाँ॥२॥ समिदंसि समेधिषीमहि स्वाहाँ॥३॥ तेजोंसि तेजो मियं धेहि स्वाहाँ॥४॥ अपो अद्यान्वंचारिष रसेन समंसृक्ष्महि। पर्यस्वा र अग्न आर्गमं तं मा स॰सृंज वर्चसा स्वाहाँ॥५॥ सं माँ उग्ने वर्चसा सृज प्रजयां च धनेन च स्वाहाँ॥६॥ विद्युन्में अस्य देवा इन्द्रों विद्याध्सहर्षिभिः स्वाहाँ॥७॥ अग्नयें बृहते नाकांय स्वाहां॥८॥ द्यावांपृथिवीभ्याः स्वाहां॥९॥ एषा तें अग्ने समित्तया वर्धस्व चाप्यांयस्व च तयाऽहं वर्धमानो भूयासमाप्यायंमानश्च स्वाहाँ॥१०॥ यो माँ ऽग्ने भागिन र् सन्तमथां भागश्चिकीं र्षति। अभागमंग्ने तं कुरु मामंग्ने भागिनं कुरु स्वाहाँ॥११॥ समिधंमाधायाँग्ने सर्वव्रतो भूयासङ् स्वाहाँ॥१२॥ (परिषिच्य) [देवं सवितः प्रासांवीः।] स्वाहाँ॥१३॥

#### ॥उपस्थानम्॥

(अग्नेः उपस्थानं करिष्ये।)

यत्ते अग्ने तेज्नस्तेनाहं तेज्नस्वी भूयासम्।
यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाहं वर्चस्वी भूयासम्।
यत्ते अग्ने हर्स्तेनाहं हर्स्वी भूयासम्।
मिये मेधां मिये प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु।
मिये मेधां मिये प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं देधातु।
मिये मेधां मिये प्रजां मिये सूर्यो भ्राजो दधातु॥
अग्नये नमः।

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं हुताशन।
यद्धुतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
प्रायश्चित्तान्यशेषाणि तपः कर्मात्मकानि वै।
यानि तेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम्॥

कृष्ण कृष्ण कृष्ण। कृष्ण कृष्ण। कृष्ण कृष्ण। कृष्ण कृष्ण कृष्ण।

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

#### ॥भस्मधारणम्॥

(होमभस्म सङ्गृह्य। वामकरतले निधाय। अद्भिः सेचयित्वा। अनामिकया पेषयित्वा।)

मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नों रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नर्मसा विधेम ते॥ मेधावी भूंयासम्। (forehead) तेजस्वी भूयासम्। (heart) वर्चस्वी भूयासम्। (right arm) ब्रह्मवर्चसी भूयासम्। (left arm) आयुष्मान् भूयासम्। (neck) अन्नादो भूयासम्। (back of neck) स्वस्ति भूयासम्। (top of head) श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम्। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ श्रियं देहि मे हव्यवाहन ॐ नम इति।

## ॥ समर्पणम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

### आचमनम्।

समर्पणम् 7

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.

GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita

Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/